

(१)

बाबूसे अनन्त धवाइत बाजल—“बाबू ओ ! एक-दू टा फाइल लिहि-
एक...।” आगू ओ नहि बाजल । नहि कहलकनि जे कागतक तावपर
लिखैत छी तँ कथा सभ हेरा जाइत अछि । कैंकटा हेरा गेल तँ एक-
ठाम संचित राखऽ लेल । कथाक नाम लेत तँ खिसिया जयथिन ।

ओ जेना सुनवे नहि कयलथिन । अनन्त टेप-रेकार्डर जकां अपन
माडके फेर सुना देलकनि । एहिपर हाथक एकटा पुर्जी फेकैत ओ ललकि
उठलथिन—“लैह तोही” खर्च-बर्च करह । नयनी साहुक रुपैया दहक ।
भौकपरवला बनियाँक नोन तेलक पाइ तँ चुकती नहिये भेलैक अछि ।
मकानक किराया दऽ दहक, आइ तेसर मास भऽ गेलैक । कहिया धरि
टारैत रहवैक । बौअनमा आ ललन दुनु भाइक फी, आ एक-एक टा किताब ।”
फेर ओहि पुर्जी दिस इंगित करैत वजलथिन “यैह सभ तँ हिसाब-
वारी करैत रहिएक । आमदनीसँ दोवर खर्च छैक ।...तोही घरके
चलावह । बाज अयलहुँ हम घर-गिरहसीस ।”

ओकरा होइत छैक जे ई ललकार ओकर दायित्व एवं विवेकके
भेटि रहल छैक किन्तु ओ किछु कऽ नहि पवैत अछि । घरक जेठ वालक
भेने की ! आव परिवारक डगमगायल स्थितिमे एकरो सहयोग चाही ।
एहि दिशामे एखनेसँ प्रयत्नशील अछि । नियोजनालय-कार्यालयमे नाम
लिखाओत मुदा बी० ए० क परीक्षा-फलक प्रतीक्षा छैक । गेल रह्य
ओतऽ एक दिन मुदा दू सयसँ ऊपर स्नातक देखि कऽ, अपस्यांत भऽ
कऽ घुरि आयल ।

एखन पारिवारिक भार-बहवमे अपनाके अक्षम वृद्धैत अछि । छोटका
दुनु भाय तँ सहजे छोट छैक । शरीरसँ क्रोमल विचारसँ तनुक । आगि-
पानिक चेन्हेके परखि सकवाक क्षमतासँ दूर । कतेक सोचि-विचारि कऽ
ओ निर्णय कयलक जे बाबू अवाध गतिपर परिवारक एकमात्र मानिजन
होथि ।

अनन्तक मोन ठिसुआ गेलैक ।

× × × × ×

सांझमे मोन बहटाऽ लेल पहाड़ी-साइड दिस गेल तँ बेसी काल थमि
नहि सकल । दिनेश कतबो कहलकैक जे कनेक राज्य-पुस्तकालयमे अखबार
पढ़ऽ लेल चलह, किन्तु ई नहि जा सकल । दिनेशक संग अपन भेल-जोल-
के ओ कम्म करऽ चाहैत अछि । किएक तँ एकरा संग ओ दस रुपैयासँ
बेसी एक्के वेरमे खर्च कऽ दैत छैक । आ कहियो-कहियो तँ एहन अव-
सर दिनमे दू-तीन बेर भऽ जाइत छैक । जतऽ एकर प्रवेश नहि ततहु
चलि जाइत छैक—चुरवला होटल, ‘बेइमान’ (तीन बेर), ‘हेरे-राम हेरे
कृष्ण’ आ कैंकटा अंग्रेजी फिल्म । संगे चलैत छैक ‘इण्डिया किस्स’ आ
‘रिजेंट’क अवगणित पैकेट ।... ओ लाजे सिजरा ओकरा पिजयवाक
इच्छा रखितो नहि पिया सकैत छल । ओकरा पाइ ओतैक कतऽ !
बाबू कहियो जेब-खर्चक लेल एकोटा चौअन्नियो नहि देलथिन । आन तँ
आन भेलैक ।

दिनेशसँ अपन पिंड छोड़वैत काल ओ सोचि रहल छल जे डेरा-
पर आव भानस शुरू भऽ गेल हेतैक । चिक्कस सानव अनन्तक जिम्मा
छैक । बौअनमा तँ चिक्कस सानि नहि सकैत अछि, आ ने कोइला दऽ
सकैत अछि । कोइलाक कारी ओकर हाथमे लागि जाइत छैक आ चिक्कस
ओकरा तरगुज लगैत छैक जेना ‘चाली हो’ । यैह शब्द कहने रह्य
एक दिन । ललनजी सानि लैत छैक । मुदा आइ तीन दिनसँ तँ बँह सानि
रहल छलैक ।

ओ जेना तिराइत डेरा घुरि आयल ।... पँसि गेल अपन कोठलीमे
कोइला आ अरजाल-खरजालसँ भरल कोठलीमे, जाहिमे बौअन सेहो
छैक ।... कोठली बिस एना बढल रह्य जेना कोनो चोर हो जे चोरिक
वस्तुजात तँ लऽ लेलक मुदा लऽ जयवाक दाओ ताकि रहल हो । उद्देश्य
यैह जे ओकर पदचाप बाबूके सुनाइ पड़ि । ओ जनैत अछि जे बाबू
किछु नहि कहथिन । आव नहि किछु कहैत छथिन । बियाहसँ पहिने
ओकरा पीठपर कैंकटा चट्टी टूटल होयतैक । थापर आ सातक कोन

कंठमे अटकल विष

: श्री चन्द्रनाथ :

ठीक ! किन्तु तकर बाद तँ अपनाके आश्चर्यजनक ढंगसँ संयमित कऽ
लेलथिन । आव गुम्मे-मुम्मे रहि कऽ ओकर व्यवहार एवं क्रिया-कलापक
परीक्षण करैत रहैत छथिन जकर परीक्षा-फल अनन्त नहि बुझि सकल
अछि । एहन विषम-परीक्षा ओकरा, झंझावात जकां तसित कऽ दैत छैक ।

अनन्त अपन कोठलीमे साँस रोकने पँसल रह्य । आव जेना प्रत्या-
शित वा अप्रत्याशितक प्रतीक्षा कऽ रहल हो । फुलपेन्टके फोति कऽ
गेरुआ तर ‘फ्रीज’ बनल रहऽ दुआरे चपोति कऽ राखि लेलक । लुपि
पहिरऽ लागल । हाथ कार्यरत रहैक किन्तु कान बाबूक ‘रूम’ दिस रहैक ।
ओतहि बौअन आ ललन रह्य । तावत् ओकर कान किछु शब्द ग्रहण कयल-
कैक—“अनन्तके वजा लवहक बौअन ।” बाबूक स्वर किछु अँच
रहनि । संभवतः ओकर सुनाओल जायब अभीष्ट रहनि ।

बौअन अयलैक ओकर घरक केबाड़ लग आ कि अनन्त बिना समाद
मुनने कहलकैक—“हम अबैत छी ।” बौअन ई समाद लेने घुरि गेल
बाबू लग ।

किछु क्षण पश्चात् ओ बाबूक कोठलीमे प्रवेश कयलक । बौअन आ
बलन भावी ‘इन्टरव्यू’क क साक्षी बनवाक हेतु बँसल छल । एकरा दुनु
गोटके कोनो गंभीर पारिवारिक चर्चमे बड़ मोन लगैत छैक । बौअनमा
तँ मुसरक बीच ठकुरा जकां लार-चार करऽ लगैत छैक ।

ओकर बाबू अनन्तसँ पुछलथिन—“गामसँ चिट्ठी जे अयल” से देख-
नहक ?”

“कहाँ ।” अनन्तके कोनो उत्सुकता नहि ।

“लिखल छै” जे भद आव केतत । आ आन समाचार बड़ बढ़िया”
अनन्त चुप्प भेल मुनैत छल ।

बाबू विवशताक संग बजलथिन—“हमरा तँ छुट्टी नहि अछि, ते
भद कटयवाक लेल तोहर गम जायब आवश्यक छह । बटाइदार सभक
हाथपर छोड़ब उचित नहि । मुदा किरायाक प्रबंध तोरा लेल कोना
होयत ?” फेर कनेक सोचि कऽ वजलथिन—“तो गाम जाह ।
एतऽ जे होयतैक से देखल जयतैक ।”

अनन्त वृद्धि गेल जे ओकरा गाम पठयवाक निर्णय बाबू बदलथिन
नहि । मात्र रुपैयाक अभाव एहि निर्णयके बदलि सकैत छलैक किन्तु
तकरो कोनो समाधान ओ सोचि लेलथिन । आव ओकरा लग एकर अति-
रिक्त कोनो उपाय नहि जे गाम जाय । मुदा ओ कि गाम जाय चाहैत
अछि ? कथमपि नहि । ओकरा गामसँ घृणा नहि छैक । ओतऽ रचल
बनरफाससँ घृणा छैक । लावा लोकके बड़ दीव लगैत छैक मुदा बन-
रवज्जाक लावा बानर-सभसँ कतेक मूल्य मङ्गैत छैक !... भक्तोभक्त का
देल गेल छैक ओकर गाम ।

बाबूक आदेशक पाछाँ ‘वीटो’क संकेतके ओ झुलैत देखि रहल छल ।
अनन्तके होइक जे चिकरि कऽ एहि आदेशक विरोध करय । किन्तु ओकर
अचेतनके स्वर नहि भेटि सकलैक—“बेसि” । ओकर स्वीकारोक्ति
छलैक ।

“तँ । भो हके बससँ चल जाह ।” बाबू कहलथिन ।

“हँ भैया ! नीक रहत । राति भरि लहेरियासरायमे बिता लेब ।”
बौअनमा बीचमे टपकि पड़ल । अनन्त एकटा आनैय दृष्टि बौअनमा दिस
फेकलक, मुदा बाबूक उपस्थितिमे एहन-एहन कतेक अग्नि-बाण बौअन-
माक लेल प्रभावहीन ।

अनन्त मुनैत रहल । चिक्कसवला टीनके घीचि कऽ ओहिमहक
चिक्कस लऽ कऽ सानऽ लागल । बाबू किछु लिखऽ लगलथिन । भरिसक
गाममे ओकरा आर जे जे काज छैक तकर लिस्ट-एक दू... दस... आ
कतेक रास । गामसँ पत्र ओकरा एही क्रमांकासँ देबऽ पड़ैतैक ।

ओकर महत्वाकांक्षा रहैक जे पत्नी शिक्षिता हो ।
विद्योत्तमा सन पत्नी लगमे ओ महामूर्ख बनबा लेल
सहर्ष तैयार छल । मुदा एहि महत्वाकांक्षाक बीचेमे
बरारि फूटि गेलैक । भा, परिणामस्वरूप सोवामिनी
सन अशिक्षिता बथा गेलैक ।

चिक्कस सानि कऽ ओ ऊठि गेल । ओअन सोहारी बेलि लेत ।
ओ हाथ-ताथ धो अपन 'रूम' मे चल आयल । मोन ओकर ठेकान-
पर लागि गेलैक । क्षणिक शान्ति । किन्तु ओ कल्पना कऽ सिंहिर उठैत
अछि जे खाइत कालमे फेर यह प्रश्न उठैत—गाम आ अनन्त । अनन्त
कंकटा प्रश्न ओकरा घेरि लेतैक । . . . ओकर भंग-प्रत्यंग जेना धुमसुरसँ
धरा गेलैक ।

खाइत कालमे ओकर भयक विपरीत फेर कोनो चर्च नहि भेलैक ।
एही भयक कारणे ओकरा भोजन दिस ध्यान नहि रहैक तँ बिन छोकल
छलैक । मुँहमे एखन कोचि लेत तँ पुनः ओकरा भोजनक कल्पना कऽ
भायकेँ सेहो बडु कष्ट होइत छैक मुदा पिताक एहि प्रस्तावकेँ कहियो
नहि ओ मानि सकल जे दाथवाली (अनन्तक अर्द्धांगिनी) केँ राँची
रहबामे एतऽ लाज होयत । आन संगी सभक तँ बियाहो नहि भेलैक
अछि ! पिताक रूखि एखनधरि नरम छनि । संभवतः एहि भरोसपर
जे जहिया नोकरी करत तँ पत्नीकेँ अवश्य आनत । मुदा अनन्त की एना
कऽ सकत ?

ओकर आँखिक सोझमे दाथवालीक चित्र टङि जाइत छैक । संगहि
ओकर आँखिक गोलका दुनू जोति माँटिपर खसि कऽ फचक सन रहि
गेलैक ।

अनन्तक बाटीमहका दालि हाथक कोनो अनियंत्रित गतिसँ माँटिपर
खसि पड़लैक । ओकर बाबू देखि कऽ अनठा देलथिन । हुनका लेल
जेना ई एकटा शुभसूचक बात जे अनन्तक ध्यान गामपर छैक । गामक
बाध आ गाछीसँ सिनेह जोड़ि रहल अछि । विशेषतः पंतुक भरथैयासँ ।

ओ कुरुड़ कऽ जाय लागल तँ बाबू एतवे कहलथिन—“समान-तमान
बान्हि-छेक लैह । भोरमे कि समय भेटतह !” छौवे बजे तँ बस छैक ।
अनन्तक मोन ऊपरसँ नीचा धरि लोहछि गेलैक । मोने मोन बाजल
—“समान की बान्ह कप्पार ! ने धोती अछि आ ने पयरमे चट्टी ।” एहि
दुनूक पूर्ति होयब असंभव । ओ जनैत अछि जे चट्टी नहि भेटत । ओ
बाबू एखन धरि बदललाह अछि कहाँ जे बियाहमे आठ आना कँचा
फटलाही जूताक सियाइक हेतु नहि देलथिन । हुनका संगे गप्प करैत
रामकिशुन मिसर अठन्नी निकालि कऽ दऽ देलकैक । आ धोती ?—धोती
तँ ओकरा भेटि सकैत छैक मुदा दनियाही । ने ओकरा कहिओ बाबूक
यजमनिका पसिन्द पड़लैक आ ने यजमनिकाक धोती । कोनो भोज-भात-
मे एहि दुआरे सम्मिलित होइत छल जे ओहि साँझ भानसे नहि होइत
रहैक डेरापर । बाबाक देल वेद-ज्ञानकेँ हाथ ऊपर-नीचाँ करैत बाबू
अपना ऊपर लदने छथिन ।

ई सभ सोचैत ओ समान भऽ कऽ ओछाओन पर खसि पड़ल ।
कोनो अज्ञात लहरिसँ ओकर काया भुटकऽ लगलैक ।

(२)

गाममे स्नानादि कऽ जखन अडना आयल तँ दुआरिपर पीढ़ी बिछा
देलथिन माय । अनन्त पीढ़ी पर बैसल आ सामनेमे माय । कतेक मास
बाद मायकेँ नजरि भरि देखलक । रोगक मारलि कुशकाय लगैत रहथिन ।
ई एकसरि मालक थड़िसँ नऽ कऽ चिनुआर धरिक कार्यकेँ सम्भारऽ-

वाली ! आव-तँ जेना दम्मे नहि छनि । सभटा प्युरेसिस झिक लेल-
कनि । कतेक डाक्टर कहैक जे टी० बी० भऽ गेलनि । छौ मास अस्पता-
समे रोगिणीक जीवन् बितोलनि । आ डेरापर कतेक मास । रुपैया एक
दिस आ ओ एक दिस तँ बाँचि सकलीह । स्वस्थ तँ भेलीह मुदा फेर
ओ काया कहाँ पलटि सकलनि !

एहि बीच माय ओकरा पुछलथिन—“कक्का सभक भेंट कयलहुन ?”
“न । कनेक काल बाद भेंट कऽ लेबनि । ओना तँ दलान दिस
गेल रही” ओ चुप्प भऽ गेल । ओकरा उचित नहि बुझना गेलैक
जे मायकेँ आगू व्याख्या-स्वरूप किछु बाजय । दलानपर ई जयवा लेल
बहुल मुदा दलानपर अगवे लोक रहैक । ई एहि दुआरे नहि जा सकल
जे ओतऽ कतेक गोटेकेँ गोड़ लागऽ पड़ितैक । निहुरि-निहुरि कऽ चरण-रज
जैत ओ अपस्यात भऽ जयतय । . . . पयर ओकर चोटि धुरि गेलैक ।
नेनामे अनन्त नाचि-नाचि कऽ भगवानसँ बहीन मडने रहनि । सँह
माडल-चाडल गीता थारी परसि कऽ ओकरा आगामे राखि देलकैक ।
ई ओकरा दिस तकलकैक तँ लजा गेल रहैक जे नेनामे कतेक छोट
रहैक ! नान्हि टासँ युवती कह्यबाक अधिकार-युक्त गीतिया । बियाह
भऽ गेलैक अछि ।

ओ साकांक्ष छल जे माँटिसँ लेवल टाटक ओहि पार एकटा चल मांस-
पिडकेँ ओकर एक-एक बातपर कान लागल होयतैक । ओ छैक ओकर
मायक पुतोड़ । गीताक पियरगिरि भीजी । लोक कहैत छैक जे वँह
ओकर पत्नी थिकैक । ओ अपनासँ पूछऽ लागल—“हँ ! से सत्ते आ
कि फूसि ?” एकर सत्यारोपणक हेतु पुनः ओकरा लोक सभसँ पूछऽ पड़-
तैक । अपने नहि निर्णय कऽ सकल । कतेक निकट आवि गेल
रहैक ओकरा जीवनमे ओ ! मुदा अनन्त चाहय जे ओ सहज योजन दूर
जाय । सेक्री होयतैक ? एखन तँ ओकरा लागि रहल छलैक जे अनन्तक
जीवनमे ओ असंख्य जोक बनि कऽ रक्त चूसऽ लगलैक ।

नहि जानि ओ ओहि क्षणकेँ कोनो अंगीकृत करितैक जाहिमे दाथ-
वाली स्वयं ओकरा आगामे परसि कऽ दितैक । ओकर सामनेमे तँ अन-
न्तक कऽर नहि उठितैक । सामनेमे जेना विषकट्या ठाढ़ि हो आ ऊपरसँ
परसल भोज्य-पदार्थमे विष मिला देने हो । . . . एखन धरि ओ एहि
सम्पर्कसँ बाँचल जा रहल अछि मात्र गीताक कारणे । मुदा ई परदा तँ
तावते धरि छैक जावत् धरि ओ सासुर नहि गेलि रहैक । सासुर तँ
आव ओ दू वर्षक बाद जयतैक अवस्ते । तखन ?

गीतासँ ओकर जेठ भाय अनन्त कतेक उपकृत अछि तकर आभास
गीताकेँ सेहो छैक । मुदा ओ एकर कारण वृक्षत अछि जे भाँयाकेँ
हमर हाथक भोजन बहु नीक लगैत छनि । . . . अनन्तकेँ होइत छैक
जे चिकरि कऽ गीतियाकेँ असल कारण कहि सुनावी । मुदा तकरा लेल
ओ अपनाकेँ प्रस्तुत नहि कऽ पाबि रहल अछि । तँयो अनन्त जानि रहल
अछि जे ओकर दुरांगमन काल ओ अपनाकेँ, विना गीतासँ कहने नहि
क्षमा कऽ सकतैक । आ ताहि दिन कहूँ धैर्य, नोर बनि-बनि कऽ ओकर
पुरुषत्वकेँ नोचि-नाचि कऽ, उधार ने कऽ देअय । जलफोंफी ने तँ भऽ
जाय ओकर हृदय । अनन्तक आँखि नोरा गेलैक ।

एक हाथ पीढ़ीपर धरने ओ दोसर हाथसँ खायब प्रारम्भ कऽ देलक ।
घँलसँ पानि ढारैत काल माय बजलीह—“एतेक दिन जे गाममे
रहबे” से खर्चा-वर्चा अनने छै कि नहि ?” कथीक हेतु खर्चा-वर्चा ?
ओ किछु नहि बूझ सकल । गाममे ओकर परिवार अगाध-सम्पत्तिक
मालिक नहि किन्तु खयवा-पीवाक जोकर अन्न खेतमे उपजि जाइत छैक ।
स्पष्ट रहैक जे मायक संकेत घरक अत्यावश्यक खर्च-वर्चसँ रहैक । तँ की
घरमे सेहो नहि छैक ?

मायसँ अगिलुका बात सुनवा लेल ओकर कऽरक भात हाथेमे रहैक
जेना लकवा मारि देने हो । माय कहलथिन—“चाउर-दालि तँ घरमे
नहि छौ ।”

ओकरा विश्वासे नहि भेलैक एहि बातपर—“सत्ते ?”
“सत्ते नहि तँ की फूसि ! कोठी-तोठी देखि ने” । जेठमे मुसहरनीसँ



राजलक्ष्मी

चरित-दर्शन । लेखिका श्रीमती तूलिका झा । प्रकाशक : श्री नेत्र-नाथ झा, सरिसव-पाही, दरभंगा । आकार : डबल क्राउन सोलह पेजी । पृष्ठ : एक सय चारि । मूल्य : चारि टाका ।

प्रस्तुत पोथीमे मिथिलाक एक एहन महिमामयी नारीक जीवन-वृत्त अंकित कयल गेल अछि जे कोनो समाजमे आदर्शक रूपमे स्वतः गृहीत आरंभ कयलनि तँ ओ यँह कहलनि जे 'हे राम, अहाँक चरिते काव्य थिक।' कहल जा सकैत अछि जे प्रस्तुत पोथीमे जाहि महिमामयी नारीक जीवन-चरित उल्लिखित भेल अछि कोनो पोथीक हेतु ओ गौरव-मय सामग्री भऽ सकैत अछि । ओना, एहि पोथीक यँह विशेषता अछि जे ई तेहन भाषामे लिखल गेल अछि आ भाषामे तेहन प्रवाह आनि देल गेल अछि जे सहज पाठककेँ अपना दिस आकृष्ट कऽ लैत अछि । संगहि वर्णनमे रोचकताक तेहन अंश अछि जे एके बँसकमे सौंसे पोथी पढ़ि लेबाक हेतु विवश कऽ दैत अछि । कहवाक प्रयोजन नहि जे जाहि उद्देश्यसँ लेखिका पोथीक प्रणयनमे प्रवृत्त भेलीह अछि ताहिमे ओ पूर्णतः सफल भेलीह अछि । आशा कयल जा सकैत अछि जे समाज द्वारा एहि पोथीक समावर होयवे करत ।—सुशेची

आराधना

व्रत-पूजा प्रक्रिया । लेखिका : श्रीमती जयन्ती देवी । प्रकाशक : (नहि देल गेल अछि) । प्राप्ति-स्थान : श्री युगेशनाथ झा, ६ गिरिन्द्र मोहन रोड दरभंगा । आकार : डबल क्राउन सोलह-पेजी । पृष्ठ : दू सय चौदह । मूल्य : तीन टाका ।

जेना कि नामसँ ज्ञात होइत अछि, आराधनामे मिथिलाक व्रत-उपवास, पावन-तिहारक सविधि वर्णन भेल अछि जाहिसँ मिथिलाक सांस्कृतिक पक्षपर नीक जकाँ प्रकाश पड़ैत अछि, किन्तु जे कि दरभंगा राजक बातावरणमे ई पोथी लिखल गेल अछि आ ताहिमे बड़ी महारानी साहिबा (श्री राजलक्ष्मीजी)क मिथिलाक विधिक अनुसार व्रत, पूजन-प्रक्रिया ओ समारोह सभकेँ एहिमे चित्रित कयल गेल अछि तँ एहि पोथीक महत्त्व आर बढ़ि गेल अछि । एक तरहेँ कही तँ एहू पोथीमे श्री राजलक्ष्मीक जीवन-वृत्तक नीक झाँखो भेटैत अछि । ओना, श्री राजलक्ष्मीजीक भक्ति-भावना, उदारता ओ सदाशयतासँ ओहो व्यक्ति नीक जकाँ अवगत रहल अछि जे हुनक सम्पर्कमे नहियो आयल अछि, किन्तु एहि पोथीसँ हुनक महत्ताक सम्बन्धमे जे लोक नहियो जनैत छल से प्रत्यक्ष भेल अछि आ तँ कहल जा सकैत अछि जे ई पोथी दरभंगा राजक अन्तःपुरक एहन इतिहास कहैत अछि जे पवित्र अछि, पुण्यमय अछि, प्रेरणादायक अछि ।

श्री राजलक्ष्मीजी मिथिलाक व्यवहारमे कतेक पटु छथि, अपन आराध्यक प्रति भक्ति-भावनामे ओ कोन तरहेँ ओत-प्रोत रहैत छथि तथा संगहि ओ कोन कोटिक ममतामयी छथि तकर परिचय एहि पोथीसँ नीक जकाँ भेटि जाइत अछि ।

पोथीमे बड़ी महारानी साहिबाक आराध्य श्री राजपतिक संग-संग कतिपय एहन चित्र अछि जे पोथीकेँ विशेष आकर्षक बना दैत अछि । आशा कयल जा सकैत अछि जे मिथिलाक विधि-व्यवहार ओ पूजा-प्रक्रियाकेँ स्मरण रखबामे सेहो ई पोथी सहायक होयत ।—सुशेची

कंठमे

पृष्ठ १६क शेषांश

छँक ता धरि ओकरा गदोमे लेटयवाक, सौंसे मुँहकानमे पैसा लेबाक अधिकार छँक । सभ तरहेँ ओ एहि गदोकेँ संग क्रीड़ा कऽ सकैत अछि ।

X X X X X X
खयलाक बाद ओ फेर क्रोम्हरो निकलि गेल रहय । किन्तु भोतिआइत आ कोनो अज्ञात शक्ति द्वारा धकिआओल जयबाक कारणेँ अपन घरक चौखटि लग आयल । ओ अनुमान कऽ लेलक जे ओकरा लेल केबाड़ तँ फुजले होयतक मुदा तँयो किस कऽ टेल देलकैक दुनू पट्टाकेँ ।

अकचका गेलि रहैक दाथवाली । पलंगपरसँ उठि कऽ ठाढ़ि भऽ गेलैक । लालटेनक हल्लुक प्रकाशमे ओकर स्वाभाविक प्रतिक्रियाकेँ ओ देखि रहल छलैक । ओकरासँ उठि कऽ अपन साड़ीकेँ ठीक करऽ लागलि रहैक आ घोष तानि लेने रहैक जेना क्रोहवरक कनियाँ हो । आइ ओकर बियाहुल जीवनक चारिम वर्ष रहैक । अनन्त लेल जेना चारिम बरखी हो ।

अनन्तकेँ होइत छँक जे दरजीवाली कैंची लऽकऽ कतरि लैत ओकर पीठपर लटकलही चोटी । नहि ! नहि ! ओनामे तँ 'वाल्हेबयर' वाली भऽ सकैत अछि । पुनः ओ सोचि रहल छल जे अस्तुरासँ छलि देअय ओकर सौंसे केश-राशिकेँ । ओकर सिउँधक सिनुर रेख ओकरा नीक नहि लागि रहल छलैक । अपन दहिना हाथ दिस ताकि रहल छल ओ । कतेक पँध गलती कयलकैक ओकर ई हाथ ! बिना देखने-सुनने ई हाथ, आँखिक सहमति बिना, ओकर सिउँधपर चलि गेलैक । पुरहित जेना-जेना कहलकैक तेना आँखि मुनि कऽ कयने गेल । तकरे फलस्वरूप आइ ओहि छौंड़ीकेँ अनन्तक पत्नी कहयबाक अधिकार भेटि गेलैक अछि ।

एक बेर अपन घर दिस ताकि ओ पलंगपर उचकि कऽ चढ़ि गेल जेना ओ छौफुटा होइतो बौना भऽ गेल हो । पत्नी दिस ओकर आँखि चलि गेलैक । ओकर अर्द्धाङ्गिनी माने 'करिकी' उपनामसँ सम्बोधित ! कहाँ दन जन्मक किछु मास बाद मरऽ लगलैक । मुदा मुइलैक कहाँ ! कहाँ दन करिकी नाम रखलासँ बचि गेलैक । किएक तँ कुबोल कयलापर मरणासन्न लोक जीवि जाइत छँक । अनन्तकेँ एहिमे कोनो कुबोल नहि बुझना जाइत छँक ओ करिकी तँ छँके—कारी बापक करिकी बेटी । ई कहाँ कुबोल भेलैक कुबोल तँ छँक ओकर सौदामिनी नाम जे पँध भेलापर राखल गेलैक ! अनन्तकेँ वास्तविक स्थितिपर बेर-बेर नजरि जाइतो ओकरा नहि स्वीकारब, बड्ड हास्यास्पद लागि रहल छलैक ।

नहि जानि किएक 'करिकी' केँ अपन जीवनमे प्रवेश करिते कालीजीकेँ अनन्त पसिन्न नहि करैत अछि । काली जी ओकरा लेल करिलुठवी भ गेलथिन । कतेक राति तँ सपनामे सौदामिनीकेँ काली रूपमे देखि कऽ चेह उठैत अछि ओ, किएक तँ ओकरा हाथमे अपन मूडी देखैत अछि ।

ओकरा सौदामिनी कहियो पसिन्न नहि पड़लैक । गोलक्री मुँह । ठोरव नीचाँ हड्डि छँक नहि । गाल तँक उटल जेना बरहमासा गलफुल्ली धयन हो । दू आडु रूक कपार । सभसँ मोनकेँ खिचकानि करय सौदामिनीक ठोर—करिया ठोर आ सेहो नमरल । भरिमुँहमे ठोरे-ठोर । अनन्तक दृश्य देखि कऽ ईहो कोक सेहन्तासँ 'किस' करऽ चाहय । मुदा अपन एहि सेहन्ता केँ तँजाव छोटि कऽ जरा देलक ।

सौदामिनीक हँसी नीक नहि लगैत छँक ओकरा । मुँहकेँ गोल क हँसैत छँक जेना बनरनी खोखिआइत हो । नहि जानि गीतियाकेँ कोन कोना ओकर हँसी नीक लगैत छँक । कहियो गीतियाक संगे गप्प करै काल ओकर हँसी अनन्तक हृदयकेँ विदीर्ण कऽ दैत छँक ।

पत्नी ओकर 'मैचिंग' नहि छँक ओकरा संग । ओ दुनू जेना ताल-बेताल एक छौ फुटा तँ दोसर भूट्टी । कोना कऽ ओकरा संग ओ शहरक सड़कप चलि सकत ! लाजें तँ ओ कठौत भऽ जायत । आ ओकर चालि केहन छँक टाप मारि कऽ चलैत छँक । अडनाकेँ अपन घोड़चालिसँ दलमलित करऽवाल छँक ओ ।

ओकर पत्नी बड़ी काल प्रतीक्षा कयलापर सुगबुगाय लगलैक । अनन्तक लग ओकरा हेन कोनो शब्द नहि छँक । सधि गेलैक जेना सभ टा आने-आ

ठाम आ कि बौक भऽ गेल ओ । पलंगपर ई करोट बदललक आ चट्टरिसँ अपन मुँहेकेँ झाँपि लेलक । साँसेकेँ हल्लुकेसँ छोड़-लेबऽ लागल । . . . कनेक काल लेल ओ सचेष्ट छल जे ओ की करैत छैक । अनन्त जासूस भऽ गेल— 'जेम्स बांड-जीरो जीरो सेवन' ।

ओकर पत्नी पलंगक पासिसँ फराक भऽ गेलैक आ घरसँ बाहर चल गेलैक । अनन्त सोचलक जे आब ओ एहि उपेक्षापर प्रायः नहि आओति । जाँत लग वा भनसा घरमे ओड-घरा जायति । ओकरा इच्छा नहि भेलैक जे सौदामिनीक हाथ पकड़ि कऽ पलंगपर बैसा लेअय आ अपन देहपर खसा लेअय. . . .

अनन्तक सोचब मिथ्या भऽ गेलैक । ओ पुनः घरमे चलि अयलैक । ओकर एक-एक क्रियापर अनन्तक ध्यान टाडल रहैक । . . . ओ असघनीपरसँ एक टा केथरी घीचि कऽ लेलक आ पुरनाधुरना साड़ीकेँ नुडिया कऽ सिरमा तर राखि लेलक । . . . सूति रहलि ओ जेना निष्प्राण भऽ गेलि हो ।

मुँह सौदामिनीक ओकर विपरीत दिशामे रहैक ।

सौदामिनीक खोर-चार बन्द भेलापर ओ ओकरा दिससँ नजरि घुमा लेलक । एहि प्रक्रियामे नजरि ओकर देवालपर टाडल फोटो दिस तिरा गेलैक । सौदामिनीक सियल 'पीरिये जी' पर । ओहि 'पीरिये जी' लिखबामे जाँक बेर सुइ चलाओल गेल होयतैक से जेना ओकरे करेजेकेँ खोधि-तोधि कऽ सड़ावऽ लेल । . . . एक बेर जे देखतैक से अशिक्षिता नाम धऽ देतैक, जे अनन्तक एखने गराति लगैत छैक ।

ओकर महत्वाकांक्षा रहैक जे पत्नी शिक्षिता हो । विद्योत्तमा सन पत्नी लगमे ओ महामूर्ख बनवा लेल सहर्ष तैयार छल । किन्तु एहि महत्वाकांक्षाक बीचेमे दरारि फूटि गेलैक । आ परिणामस्वरूप सौदामिनी सन अशिक्षिता बया गेलैक । जे कहियो भूल-चूकसँ भट्ठा माटिपर घसने हो से हो सौभाग्यक बात ।

साहस कऽ एक दिन ओ सौदामिनीकेँ सिलेट आ पेन्सिल धरौलकैक । अ, आ, इ, ई क्रोन चिड़ैक नाम छैक सेहो आइ धरि नहि सुनने रहैक तखन ए, बी, सी क कथे क्रोन ! कतेक उपालम्भ जे यैह सौदामिनी भाय सबकेँ

पढ़ैत काल लालटेन पहुँचा जाइत रहैक ! . . . ओकर साहस बिना गेलैक । आ तकर बदलामे प्रकट भेलैक क्रोध । ओ सिलेटकेँ उठा कऽ देवालपर मारलकैक—फट्ट । चुन्नी-चुन्नी भऽ गेलैक सिलेट । सौदामिनी ओकर मुँह तकिते रहि गेलैक । ओकरा लगलैक जे एकरा विद्या-दान करवमे कहूँ ओकरो विद्या ने विलुप्त भऽ जाय !

ओहि दिनसँ ओ करेजपर मुक्का मारि कऽ सदाक लेल संतोष करय । विद्योत्तमा बिना ओ अपूर्ण कालिदास छल । कथाक 'प्लोट' सुझौलाक बदलामे सौदामिनी ओकर जीवनक नाटकीय अंत चाहैत रहैक ! कामदीक बीच हिरला-झुल्लाक बदलामे ओ दासदीक बीच अपनाकेँ गाड़ि लेने छल । आब 'मैन्युस्क्रिप्ट' अपने लिखऽ पड़तैक ! 'वाइफ-कम-स्टेनो' आब के रहतैक ? ओ मात्र एकसर अछि—एकसर. . . . एकसर ।

सदिखन कल्पित एवं पल्लवित बौद्धिक भूख जखन सौदामिनी नहि मेटा सकलैक तखन शारीरिक क्षुधा मेटायबसँ अपनाकेँ क्षुद्र बनायब, ओ सोचैत रहय । . . . तँ ओ अपना संग ओकरा राँची नहि लऽ जयतैक । . . . ओकरा संग एक्केँ पलंगपर नहि सुततैक ! . . . अपन सारेक सोझामे बिना पढ़ने लिफाफ सहित ओकर चिट्ठी फारि देतैक !

ओहि दिन सिलेट फूटलाक बाद अपने ओ प्रयास कयलक किछु । तँ राँचीमे वा अन्यत्र ओकर चिट्ठी अबैत रहय । ओ लोहछि जाइत छल । पता अशुद्ध, नाम अस्पष्ट (एहन चिट्ठीकेँ पहुँचयबाक हेतु डाक विभागकेँ धन्यवाद) आ चिट्ठीक विषयकेँ ओ भरियो दिनमे नहि वृत्ति सक्रैत छल । किदनि-किदनि फकरासँ भरल । ओहि राति स्वप्नमे प्रेमालापक बदलामे अनन्त क्रोधालाप करैत छल । . . . आब छौ-सात माससँ चिट्ठीक आगमन बन्द छैक किएक तँ ओ हनिकऽ लिखने रहैक एकर विरोधमे । संगहि तेरहम विद्याक (जकर प्रयोग ओ आइ धरि नहि कयलक अछि) डर देखौलकैक ।

ओ प्रायः सूति गेल रहैक । किन्तु ओ भालरि जकाँ कापि गेल जे फेर भोरे तँ ओ उठिये जयतैक । क्षण भरिमे ओकर सौसे देह सुन्न भऽ गेलैक जेना बनैया इतुरी स्प्रिंग क्रोबरा थूकि देने हो ।

(अग्रिम अंकमे समाप्त)

नहि जायब ।' अनन्त जिद् धऽ लेलकै ।

पंचानन नहलापर दहला देने रह्य—“अहाँक गाममे तँ फुटबालक खेलो नहि होइत अछि कहाँ दन । हमरा गाममे तँ होइत अछि । ई तँ अहाँक ‘फेवरिट’ खेल अछि । ओतऽ किछु दिन खेला कऽ चल आयब । . . . अहाँ तँ नीक गोलकी छी ।”

अनन्तक मनुख अपन संकल्पक लीकसँ हटि गेलक । मुदा ओतबे जतेक दूर धरि ‘स्पोट्समैन-स्पीरीट’क क्षेत्र छँक । एहि क्षेत्रपर शेष मनुख, किछु कालक बाद, अधिकार कऽ लेलकै । पंचाननकेँ कहलकै—“आब हम कहूँ अहाँक ओतऽ जा कऽ फेर फुटबाल खेलायब । . . . अहाँकेँ अवसरे मोन होयत जे हम महिनाम आ शिवनगर घाटक बीचमे जे मैच भेल रह्य ताहिमे गोलकी रही । सेमी-फाइनलक मैच । दू-बेर खेलल गेलक । हम दुनू बेर गोलकी रही । किन्तु ओहि हेतु अहाँक बाबू एकठो बेर सराहलनि नहि अपितु हमरापर भूकऽ लगलाह जेना हम फुटबाल खेलाकऽ जघन्य अपराध कयने रही । ई भेटल हमर खेलौडिया मोनकेँ प्रतिफल । सज्जनता आ अनुशासन-परताक प्रतिफल । . . . हम कथ-मपि नहि जा सकैत छी ।”

अनन्त जनैत रह्य जे हाथमे एहि हालतिक आभास पविते पंचानन ओकरा अपमानित करवाक प्रयत्न करताह । ओकर चाकर कपारमे धसल छोटकी आँखि लाल-टरेस भऽ जयतिनि । . . . ‘प्रेशर-मशीन’ मे दऽ कऽ ओकरा छोट कऽ देथिन ।

“ओ० के० । बहेड़ा बजारमे हमरा किछु आवश्यक काज अछि । हम जाइत छी ।” ओ पलंगपरसँ उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल । प्रायः बहीनसँ भेटो नहि करतैक । अनन्त यहँ चाहैत रह्य ।

“कबैक नहि क्री ?”

चट्टी परक लोक पाहुन-परककेँ अटकऽ लेल नहि कहैत छँक । मुदा अनन्त कहि देलकै ।

“नहि आवश्यक काज अछि ।” कहि पंचानन चलि गेलकै ।

बसम दिन भोरमे ।

दुतीन दिनसँ माय ओकरा बहिनोक गाम मोतीपुर जयबा लेल ओतसँ हुनका बजा आनऽ लेल छड़-पुड़ी छोड़ने रहथिन । . . . ओझा

अनन्तक गाम अयबाक चर्चा नहि करैत छथिन । दरभंगासँ अपना गाम जयबा काल बहेड़ामे रुकि जाइत छथिन तँ डेगो भरिसँ थोड़ ओकर गाम नहि अबैत छथिन । . . . हुनका बोंसऽ लेल ओ गेल रह्य ओतऽ ।

मोतीपुरमे हुनक दलान लग पहुँचल । ओझाक बाप, जे आब दलाने-पर बसि कऽ रामायण पढ़ैत छथिन आ बीचमे कोनो ने कोनो लोकपर अपशब्द तीर छोड़ैत रहैत छथिन, एकरा अपन डोगीक फेमवला सगुनियाँ चश्मासँ देखलथिन । स्वागत कय-लथिन । अनन्त ओहि समयमे हुनक आँखिक भाषा नहि पढ़लक जे आइ हुनका शिकार भेटि गेल रहनि । देरी रहैक मात्र हबकबाक ! . . . हड्डियो ओकर छोड़थिन वा नहि ।

ओ जलपान एवं ओझाक संग-गप्प-सप्प कऽ दलानपर आयल तँ दुनू बापूतक समक्ष प्रस्ताव कयने छल जे ‘ओझा हमर गाम चलथि ।’ एहि पर ओझाक बाप बधुआ गेलथिन । अपन बूढ़-झुनकुट शरीरसँ जे एक तँ स्वयं कर्पित रहैत छनि, तामसे आर क्रीपा लेलथिन । गरजि उठलथिन—“अर्ये ओ ! ई कोनो माल-जाल छथि (अपन बेटा माने अनन्तक ओझाक प्रति) जे हिनका लऽ जयबनि । जाउ, नहि जयताह । . . . बापक बात मानथिन कि अहाँक . . . !”

अनन्त आब बूझि गेल जे ओझा तँ ओकर गाम अयबाक लेल तैयार रहैत छथिन । यहँ बूढ़ा नहि आबऽ दैत छथिन ! किएक तकर भेद तँ शीघ्रे फुजलकै ।

खयला-पीबाक बाद जखन ओ दलानपर आयल तँ एना भऽ कऽ घेरायल जेना ओकर ‘कोर्ट-मार्शल’ भऽ रहल छँक । जाहिमे ओकरा छोड़ल नहि जयतैक । ‘शूट’ कौये देल जय-तैक । . . . ओझाक संग जा गप्प करैत छल ततक काल तँ ओकर मोन प्रफुल्लित रहैक मुदा बूढ़ाक सामने भेलापर गोलीसँ दगा जयबाक साक्षात् भय भेलकै ।

दलानपर ओकरा संग जीरह शुरू भेलकै । ई अभियुक्त छल—अपन, माय आ बाबूक अपराधकेँ एक्के संग समेटि कऽ कठघरापर ठाढ़ । बूढ़ा एक तरफा डिग्री लैत आ बजैत गेल रहथिन—“अहाँक बाप कंजूस छथि ने तँ एकटा जमायकेँ छाड़ि दितथिन पाइ, भोती आ कपड़ा लज्जास । . . . माय अहाँक जमाय

प्रकट रूपेँ अनन्त किछु नहि बजैत रह्य । जे ज्वाला-मुखी फूटय से हृदयक भीतरे जमिकऽ पतालीय चट्टान मे परिणत भऽ जाइक । आग्नेय नहि भऽ सकलकै । हुनक प्रश्नक ओ कोनो सोझ उत्तर नहि दैत रहनि । सोझ उत्तरक तात्पर्य जे हुनका आगाँमे ‘ब्लैंक चेक’ दऽ बेत जाहिमे ओ असंख्य राशि भरिकऽ भजा लितथि । मुदा, से ओ कोना करताह ! कोन व्यक्तिगत कमाइ पर ।

डेबऽ नहि जनैत छथि । फड़दुलाहि छथि । आ अहाँ सेहो कम नहि छी ।” एहि बेर विचित्र मुस्कीसँ परिपूर्ण रहनि हुनकर ठोर ।

ओझा दलानपरसँ उठि कऽ चल गेलथिन ।

ओ पुनः बाजऽ लगलाह—“अहाँक बहिनो” रूसल छथि एकटा फटफटिया लेल । क्रीदनि तँ नाम छँ ओकर ! क्री नाम छँ” हौ किशुन (दलान पर रहनिहार एकटा हुनक सेवक) ? . . . हँ ! हँ ! मोन पड़ि गेल ‘रील इफिल’ । . . . एकर सेहन्ता छनि अहाँक बहिनो’केँ । हमरा तँ फल्लाँ गामवला फटफटिया गछने छलाह । अहाँकेँ देबऽ पड़त । ने तँ हे ओ ! हमर बेटा एखनो भजि सकैत अछि ।

मोन भेलकै अनन्तकेँ जे उत्तर दऽ देअय—“अपने तँ बनियौटीवला गप्प करैत छिएक तँ हमहुँ कहब जे ई सभटा ताहि समयक गप्प थिक जाहिसँ पूर्वं अपनेक बेटा ‘मेडिकल’क छात्र बनऽ जा रहल छलाह । से कहाँ भेलनि ? किन्तु अपने ‘बेलौजी’-‘बेलौजी’क प्रचार-प्रसार कऽ हमर बाबूसँ हजारो रूपैया गनबा लेलथिनि आ ऊपरसँ बानीक थारी, गिलास आ बाटी । . . . आब तँ अपन ठकपनपर अपने खूब फाटि कऽ हँसैत होयब । मुदा एखनधरि जीह पनिछायले अछि ! . . . ओ सभ रूपैया अपनेक जकाँ रयतिकेँ चूसि कऽ नहि जमा कयल रहैक अपितु रूपैया रहैक ऋण तरक, परिवारकेँ अत्यावश्यक अन्न-वस्त्र नहि दऽ कऽ, बाबूक एकसर जमा कयल धनराशि ! . . . राँचीक जड़काला हमर बौअन मात्र एकटा पेण्ट आ ‘हाफ-शर्ट’ पर कटलक । हम एकटा फटलाही सूती क्रोटपर बिना मोजाक चट्टी पहिरि पौने दस बजे राति कऽ कालेजसँ आवी । क्लासमे दहिना हाथ ‘लेक्चर’ सुनबा काल पेन्टतर घोसियौने रही आ लिखबाक काल बडू कण्ठसँ निकाली

तैखन आँडुरक नस जमि जाइत रह्य । . . . बाबू साँझे घरमे फट-लाही सीइक आँड़ि लेथि जाहिमे ललनजी सेहो एक क्रोनमे नुकायल रहनि । जखन कि हुनक आन सहधर्मी सभ प्रधानाध्यापकक संग हिनका विरुद्ध राजनीति रचनि ।

“ . . . किन्तु दोसर दिस अहाँक बेटाकेँ जड़ाउरमे रेमण्डक सुपर न्वालिटीक साल, एकटा ऊनी सूट, स्वेटर, टेरेलीनक कमीज आ ब्रासलेट देल गेल रहनि हमरा ओतऽ ।”

प्रकट रूपेँ अनन्त किछु नहि बजैत रह्य । जे ज्वालामुखी फूटय से हृदयक भीतरे जमि कऽ पातालीय चट्टानमे परिणत भऽ जाइक । आग्नेय नहि भऽ सकलकै । . . . हुनक प्रश्नक ओ कोनो सोझ उत्तर नहि दैत रहनि । सोझ उत्तरक तात्पर्य जे हुनका आगाँमे ‘ब्लैंक चेक’ दऽ देल जइतनि जाहिमे ओ असंख्य राशि भरि कऽ भजा लितथि । मुदा से ओ कोना करताह ? कोन व्यक्तिगत कमाइ-पर ? . . . आइ ओकरा नोकरी नहि करवाक बडू दुःख भेलकै । यदि ओ कमाइत रहितैक तँ हुनका मुँहमे रूपैया कोँचि दितनि । सत्ते । पानियो’ पीबाक जगह नहि रहितनि ।

बी० ए० पास कऽ ओ नोकरी अवश्य करत । कमायत ।

कोनो स्पष्ट आश्वास नहि भेटलापर ओ जेना चाडुरसँ ओकरा भम्होरि लेथिन—“बहिनो” अहाँक नहि जयताह । . . . हौ किशुन ! आइ सौसे खबरि कऽ दैह जे हमर बेटा बियाह फेर करत । फेर हम ओकरा भजा लेब । . . . बहिन . . . एकटा फटफटियाक बदलामे क्रीकटा दरवज्जापर लागि जायत । हिनका बहिन जाहि दिन बडू भारी लगथिन ताहि दिन मोतीपुरमे आनि कऽ पटक दिहथि । बड़की गो छँक मोतीपुरक ई हवेली । केँ पुछतनि हिनका ! . . . हौ किशुन ! हम तोरा आदेश दैब छियइ . . . !”

नियुरास्थेनिया

: डा० श्री शारदादत्त झा :

अनन्त कानऽ लागल छल ।
... आँखिसें नोर-दहो-बहो भऽ
कऽ खसऽ लगलैक । धलपर धल पड़ि
रहल छलैक ओकरा पर अनवरत ।
... जखन किंचित होश भेलैक
तखने ओ बुझि सकल जे मोतीपुरक
सीमान टपि गेल छी ।

साँझमे

गाममे नवतुरिया सभ एकटा
'क्रीड़ा-दल' खोललकैक । अनन्त
ग्रामवासी रहबाक कारणेँ ओकर
सदस्य रहय । एम्हर एकाध मास-
के बाद फुटबॉलक एकटा 'टूर्नामेंट'
होयतक नवादामे, तकरे हेतु सभ
गोटे अभ्यास करऽ चाहैत छल ।
... गामक प्रत्येक घरसँ चन्दा
उगाहल जा रहल छलैक—दू टा
कऽ रूपैया नहि तँ दू सेर कऽ चाउर ।
अनन्तक घर एखन धरि चन्दा नहि
दऽ सकल रहय । एहि लाजेँ ओ खेलऽ
लेल आइ नहि जाय चाहैत रहय, किन्तु
युवक सभ ओकरा खेलऽ लेल विशेष
रूपसँ आमन्त्रित कयलकैक । एकर
कारण जे ओ नीक गोलक्री रहय ।
एतबाधरि निश्चित रहैक जे वैह
गामक टीमक गोलक्री बनि कऽ नवा-
दाक मैदानमे उतरत ।

जाहि मैदानमे सभ गोटे गेंद
खेलाइत छल से एकटा अनगोँआ
जमींदारक रहनि । दस बीघाक एकटा
प्लॉट रहैक । चारि-पाँच सालसँ
ओहिमे कोनो जजाति नहि उपजैत
रहैक । तेपरी पोखरि पुरिया
मोहारपर ओ खेत चारि-पाँच दिनेमे
फुटबॉलक मैदान बनि गेलैक । प्रायः
भरि दिन गेंद आ पयरक संघर्ष
ओतऽ होइते रहैक ।

तेपरीपर वला मैदानमे साँझक
समय विभिन्न टोलक नवयुवक सभ
एकत्र होबऽ लागल छल । अनन्तक
अतिरिक्त प्रायः सभ नवयुवककेँ
बुझल रहैक जे आइ जमींदारक
ट्रैक्टर साँझमे मैदान जोतऽ लेल
ओतैक । अपन धन-दौलतिक बलेँ ।
ओकर गामकेँ दबयबाक हेतु जतऽसँ
एहित पहिने कोनो विरोधक स्वर
नहि उठल रहैक । जँ फुसफुस्ती बह-
रायल रहैक तँ लहरचुड़ाक दंशसँ
प्रभावित जकाँ सहमि गेल रहैक ।

एहने शासन-तंत्रकेँ गामक नव-
युवक सभ ललकारि देने रहैक ।
सतरिया चाउरकेँ जेना मरुआ मुँह
दुसि लेलकैक । ओ मरुआ जकरा
सतरिया सभ दिन तुच्छे बुझलकैक ।

नियुरास्थेनियाक नामकरण सर्व प्रथम १८६६ ई० मे न्यूयार्क निवासी डा० वियडं एहि उक्तिक संन्यास कयलनि । नामकेँ
कोनो यांत्रिक व्याधि नहि थिक अपितु सुस्त करऽवला विषसँ उत्पन्न लक्षणक समूह थिक ।
प्रकट होइत अछि जे एहि व्याधिमे स्नायुमण्डलक कमजोरी होइछ ।

लक्षणानुसारें नियुरास्थेनियाकेँ दू भागमे विभक्त कयल जा सकैछ—(१) मानसिक (२) शारी-
रिक । मानसिक लक्षणक विवेचनसँ ई ज्ञात होइत अछि जे स्नायु सम्बर्गक जे अपनामे सम्बन्ध अछि ओ
जकर फलस्वरूप मस्तिष्कक स्पन्दन सभ ठाम पहुँचि जाइत अछि, ओ सम्बन्ध रोगाक्रमणसँ टूटि जाइत छैक ।
रोगीकेँ छोटे-छीन आ साधारणो घटना आ ताहमे मूलतः स्वास्थ्य सम्बन्धी, पैघ आ असाधारण लगैत छैक ।
शरीरस्थ कोनो ठामक साधारणो पीड़ा रोगीकेँ पैघ आ जटिल रोगक आशंका बुझाइत छैक, साधारण
साधारणो घटना रोगीकेँ विस्मरण भऽ जाइत छैक, मन सतत शंकालु, त्रस्त, अशान्त आ भयप्रद लगैत छैक ।
रोगीमे कचकचाहटि, विश्वासविहीनता आ बतहपनीक आशंका भरि जाइत छैक । स्मरणहीनताक संग-संग काम
सम्पादनमे गलती, अस्थिर मन आ चित्त आदिक लक्षण उग्रता भेने चित्तोन्माद अथवा अवसाद-वायुक लक्षण
रहैत छैक । नियुरास्थेनियाक अग्रिम रूप जतऽ पुरुषमे अवसाद-वायु या चित्तोन्मादमे परिवर्तित होइत छैक ओत
स्त्रीगणमे हिस्टीरिया देखल जाइत अछि । किन्तु जतऽ हिस्टीरिया-व्याधि पीड़ित नारी अन्यक सहानुभूति
अपेक्षा आ इच्छा रखैत छथि ओतहि नियुरास्थेनिया व्याधिबला अपन रोगकेँ नुकयबाक सतत प्रयास करैत
छथि ।

शारीरिक लक्षणमे यत्र-तत्र पीड़ा आ सुरसुरी बुझाइत छैक जेना कीड़ा चलि रहल हो । शरीर कतहु
कतहु फूलि सेहो जाइत छैक, माथमे जोरसँ दर्द भऽ जाइत छैक, दुनू कनपटीमे टपक बुझाइत छैक, माथक पाछे
भागमे भार लगैत छैक, पीठक रीढ़क हड्डीमे दर्द होइत छैक, पेट फूलि जाइत छैक, अजीर्ण किम्बा मन्दाग्नि
भऽ जाइत छैक ।

नियुरास्थेनियाक कारणक सम्बन्धमे डा० रोणिस्टा आ कालिनसक (३३ रोगीक परीक्षणक आधार-
पर) कथ्य छनि “प्रायः सभमे किछु-ने-किछु रक्त कणिका समुदायमे हिमोग्लोबिनक अभाव देखल गेल छल” ।
डा० हाजक कथ्य अछि जे “क्रोष वा क्रोष मध्यस्थ बिन्दु वा नियुक्लियसक भीतरी पदार्थक वास्तविक क्षय” ।
“साजो” केँ एनालाइटिक साइक्लोपोडिया ऑफ प्रैक्टिकल मेडीसीन”मे अछि जे “स्नायुशूलक अवसन्नो एकर
निदानक नामसँ चिर कालसँ विख्यात अछि” । व्याधिक कारण समुदायमे अति हस्तमैथुन, मानसिक अति
परिश्रम, मानसिक उत्तेजना, अन्य व्याधि सन्ताँ शक्तिक क्षय, सुरापान, अति इन्द्रिय सेवन, ध्वजभंग, स्वप्नोन्माद
अति कामेच्छा स्वरूप मानसिक दुर्बलता, चिन्ता, अति आ एकाएक हर्ष आ विषाद, आदि आदि ।

आनुवंशिक चाकत्सा—रोगीकेँ सर्व प्रथम स्वस्थ वातावरणमे पूर्ण विश्राम आवश्यक । पौष्टिक आहारक संग
मनकेँ सतत क्षण स्वस्थ आ पवित्र राखल जयबाक चाही । सांसारिक अभाव, अभियोग आ अशांतिसँ दू
रहव पूर्ण अपेक्षित ।

यद्यपि होमियोपैथिक भेषज शास्त्रानुसार दवाइक निर्धारण रोगक अनुसार तँ सम्भव नहि, तथापि
सहज जानकारीक लेल किछु पूर्ण प्रचलित दवाइ पर ध्यानाकृष्ट कयल जाइत अछि—ऐगनस, केलक, चायना
काक्युलस, हायोसिया, मर्क, नैट म्यूर, नक्स वोम, फास्फोरस, फास्फोरिक एसिड, पिकरिक एसिड, सल्फर, कृष्ण
इग्नेशिया, लैक, नैट कार्व, लाइक्री, सिपिया, एनाकार्ड, औरममेट, क्रोलो, स्टैफि, स्ट्रौम, विरेट्रम आदि ।

ट्रैक्टरक प्रतीक्षामे सभ निर्णय
कऽ लेने रहय जे आइ अन्हरगरे धरि
खेलाइत रहव, पता नहि कखन जोति
कऽ चलि जाय । दू दिस खेला-
डीक दल विभक्त भऽ गेल रहैक मुदा
बहु बहस आ 'तुम-ताम'क बाद । . . .
अंतमे पंडितक जीत भेलैक । ओकरा
दिस उतरवारि टोलक सभटा युवक
रहैक आ मात्र एक-दू टा आन टोलक ।

गेंद खेला प्रारम्भ भेलैक ।
किन्तु खेल अबाध गतिसँ नहि चलि
सकलैक । ओहि जमींदारक
ट्रैक्टर तँ नहि अयलैक मुदा ओकर
पछुलगू सभ अपने बीच गर्दमनोल
करा देलकैक । पंडितवा ओकर नेता
रहय ।

खेल प्रारम्भ भेलाक बाद पन्द्रह-
बीस मिनट बाद अनन्त जखने गेंद
मारऽ चाहलक कि अपन बूटसँ पंडि-
तवा ओकर जांघपर कसिकऽ मारल-
कैक । अनन्त तखने पयर घऽ कऽ बैसि
रहल । ई तँ कहना सुर-सार रहैक ।
तत्पश्चात् पंडितवाक दल अनचोकेँ
टूटि पड़लैक शेष नवयुवक सभपर ।
जमींदार आ पंडितवा-ट्रैक्टरक षड-
यंत्रक कारणेँ सभ अपना-अपनी करऽ
लागल रहय । तँ टगैत-टगैत गाम
पर आयल अनन्त ता धरि ओकर जांघ
फूलि कऽ डेढ़ बाड़ भऽ गेल रहैक ।
... टाडि-टुडिकऽ ओकरा अस्प-
ताल पहुँचाओल गेलैक । ओतऽ
सुइ, दवाइ आ मरहम-पट्टी भेलापर

ओ दुआरिपर लोथ भऽ कऽ
रहल जेना माँटिक थुम्हा हो ।

रातिमे
जांघपर पट्टी बन्हे
पड़ल रहय ।

पंडितक क्रीनल अखबार
ओकरा देलकैक ।

देनिहार कहलकैक—“ए
तोहर रिजल्ट बहरयलह ।”

अनन्त देखलक ।
सत्ते ! निकललैक ।

मुदा—
ओकर क्रमांक ओहिमे नहि छल

अनुत्तीर्ण भऽ गेल छल
बी० ए०क परीक्षामे ।

ई देश हमर ...

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

ई देश हमर सन्देश अमर युग-युगसँ जगकेँ दैत रहल ।
मनुजत्व हमर, पुरुषत्व हमर मानवताकेँ सजवैत रहल ॥

हम इतिहासक निर्माता छी
नव मुक्ति-मन्त्र उद्गाता छी

दलितक पतितक नव अध्यायक पन्ना तपि-तपि पलटैत रहल ।
ई देश हमर सन्देश अमर युग-युगसँ जगकेँ दैत रहल ॥

'याचितारश्चनः सन्तु' तथा
'याचिष्म मा च कञ्चन' कहि हम
वन्दना करी पितरक श्रद्धा-
सँ, राखि हृदय विश्वास परम

चौदिससँ आयल संस्कृतिकेँ, निष्कपट भेल पचवैत रहल ।
ई देश हमर सन्देश अमर युग-युगसँ जगकेँ दैत रहल ॥

कयलक नहि ककरो रोम भङ्ग
औदार्य भाव शत्रुहुक सङ्ग-

रखइत, सहलक विश्वासघात, दुख-सागरकेँ उपछैत रहल ।
ई देश हमर सन्देश अमर युग-युगसँ जगकेँ दैत रहल ॥

यदि गदहपचीसी बीति गेल
देशक हित मनमे प्रीति भेल

बढ़ बढ़त चरण प्रगतिक पथपर उत्साहभाव उछिलैत रहल ।
ई देश हमर सन्देश अमर युग-युगसँ जगकेँ दैत रहल ॥

आबह हे बन्धु !

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

लोको सभ करैत अछि आ कहितो अछि लोको सभ—
आजुक परिवर्तनमे पहिलुक समाजतन्त्र
नहूँ नहूँ क्रमहि-क्रमहि टूटल चल जाइत अछि
अपनामे प्रेम, आत्मीयताक, सौजन्यक
जे छल आधारशिला फूटल चल जाइत अछि
बाबा तँ मासे मास अबिते छलाह गाम
काका बरखमा दिन एखनो अबैत छथि,
भैयाकेँ लोकरीपर पलखतियो होइत छनि
तँयो ने जानि किएक आवि नहि पवैत छथि
तीन बरख बीति गेलनि आविए न सकला' अछि,
पकलाहा ग्राम भेलि बाबी, ने जानि कखन
तूबि जयति ततबो विचार' ने करैत छथि
हाकरि छै' लागल जे बाबाकेँ देखितियनि,
बाबा से डुम्मरिकेर फुल भेल जाइत छथि
बाबा जे एक बेर दुःखित पड़ि गेल छला'
बाबीकेँ नगर जाय पड़ल छलनि बाध्य भऽ
काकी तँ अग्रहणमे आबहु अबैत छथि
खेतो पथारकेर उपजा ओ वाडी लऽ
गाम घरक लोक वेद, हीत ओ अपेक्षितसँ
हिलि-मिलिकऽ पुरनायल सम्बन्धक गर्दकेँ
आड़ि-पोछि, नअतासँ नवताकेर रंग चढा फेरो चल जाइत छथि
भैयाकेँ कहियो जे इच्छो ई होइत छनि—गाम कने जेतहुँ तँ
भौजीकेर सहमति ओ पावि ने सकैत छथि
भौजी कहैत छथिन—आइ काल्हि गाम-घरक
'डर्टी एटमसॉफेयर', समटा पुरान चालि,
नीक लोक हेतु गाम रहिये ने गेल अछि
माटिमे लेटाथत गऽ नेना ओ भुटका सभ
गाय-बड़द-महिष बीच कूदत गऽ फानत गऽ
होयत संस्कारहीन, बुद्धि भोथ होयत' आ
गारि दश हजार सीखि लेत विना ट्यूटरक
भैयासँ भौजी किछु बेसी 'अप-टु-डेय' छथि,
आधुनिका कहवनि तँ विगड़तीह भीतरसँ
ऊपरसँ गुम्हड़ि-गुड़रि रहि जयती तखन, मुदा
कुनह सधौने विनु रहती नहि जिनगीमे
हुनका तँ गामसँ आ गाम घरक लोकोसँ
घृणा छनि, असह्य छनि, नाके मुनि लैत छथि
चर्चो जे गामक क्यो लगमे करैत छनि
कान मूनि पच्च दऽ कऽ थूक फेकि दैत छथि
गाम घरक लोकक तँ कपड़ो भभकैत छैक
गामकेर गन्धसँ तँ नाके फटैत छनि
गर्मीयो छुट्टीमे रहती जे मासो दिन
विजली पंखाक बिना जिवितो घुरि सकती नहि
एहि बीच कते एहन पोसल मनोरथ छनि
सैह पुर करती गऽ दार्जिलिंग घूमिकऽ
दमघोटू वातावरण गामक पुनि जाय ततऽ
जीवनक अमूल्य समय व्यर्थ की बितौती गऽ
बदलि गेल युगक संग बदलल अछि दृष्टिकोण
'हम दो हमारे दो' परिवारक परिधि भेल
वसुधे कुटुम्ब कहियो बुढ़वा सभ कहने छल

तकरे उर्ध्वत रहव मूर्खताक प्रतीक थिक
ई सभ तँ मंच परक भाषणकेर भूषण थिक
अनका परतारऽ ले' कहल करी जोरसँ
देश ओ समाजक समुन्नति जे चाही तँ
अपना अभ्युन्नतिमे भिड़ल रही भोरसँ
नगरक विचार-तन्तु धुवताक सीमा धरि
गाम घरक लोकोकेँ होइछ लपेटि लेत
पोछि लेत आँखिकेर कोरोसँ काजर आ
बाजब तँ ठामे हुरकुच्चत, हुरपेटि देत
आँखिक जे देखल छल—सपना से भेल आइ
विश्वारो होयत' नहि आव नज्ज तुरकेँ
अछियो विवेकी तँ बैसल अछि काते भेल
भड.ठी नहि कऽ सकैछ भड.ठल एहि सूरकेँ
वसिकऽ समाज बीच एक अपन सुखक हेतु
सौंसे सनाजकेर नाक काटि मडनीमे स्वार्थ नहि सधैत छल
अनको प्रतिष्ठाकेँ अपने प्रतिष्ठा बुझि
रखा ले' तन-मन-धन सभ किछु लगवैत छल
आवि गेल' ककरो दरबज्जापर पाहुन तँ
सौंसे टोलबैया घी-दूध-दही, तीमन ओ
तरकारी घर-घरसँ लऽ कऽ पहुँचैत छल
अबै' छल' भार दोर केरा चडैरे भरि
दहियो मटकूँडे भरि, तँयो उल्लास भरल
ताहीमे पुरासुरा बयनो बिलहैत छल
मुदा आइ नगरकेर नवका संस्कार
एहि समटा परम्पराक जड़िए उखाड़ि रहल
रहल' नहि आत्मबोध, कहि कऽ थिक रूढ़िवाद
खाधि खूनि ठामहिपर नीकोकेँ गाड़ि रहल
तथा गाम घरक लोक लालायित होइत अछि
चाक-चिक्क पूर्ण ओहि नगरे दिस जयबा ले'
छोड़ि अमृत-कलश आइ जीवन चौबट्टीपर
भ्रान्त भेल उद्यत अछि ठाढ़ जहर खयबा ले'
मुनह हे समाज ! घुरह गामे दिस कारण जे
भारतकेर आत्मा तँ गामेमे बसैत अछि
एखनो उदार हृदयवान लोक गामेमे भेटयुन
ई नगर ? छुच्छ पाउडरकेर लेन थिक
ग्रामराज्य, रामराज्य अथवा कल्याण-राज्य
नगरकेर भ्रष्ट नीति सभसँ फराके रहि
मूर्तिमान भऽ सकैछ अन्यथा कदापि नहि
राखह विश्वास अपन बाहुबलक, बुद्धि-बलक
आशाकेँ टेकह पुनि अपन देश कोसपर
छोड़ह, मृगतृष्णामे फँसबह नहि अपनाकेँ
सपना साकार करह अपनटा भरोसपर ।
आबह हे बन्धु ! गीत गाबह तँ गाम-घरक
लाबहु समुदाय मध्य चेतना समानताक
सभके जगावह, भय मनसँ भयावह आ
जोर कसि लगावह हो नाश दुःख दीनताक

(आकाशवाणीसँ साभार)